International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 | Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed | Bi-Monthly
Vol. 7 No. 35 | March – April - 2026

डिजिटल युग में हिंदी भाषा और साहित्य

अनिल भाऊसाहेब झिने[1], डॉ. भरत त्र्यंबक शेणकर[2]

[1]शोधार्थी

[2]शोध मार्गदर्शक

शोध केंद्र : एस.एन.कला, डि.जे.मालपाणी वाणिज्य, बी.एन.सारडा विज्ञान महाविद्यालय, संगमनेर, जिला - अहिल्यानगर, महाराष्ट्र

विश्वविद्यालय : सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

Corresponding Author – अनिल भाऊसाहेब झिने

DOI - 10.5281/zenodo.20580036

सारांश :

डिजिटल युग ने हिंदी भाषा और साहित्य के स्वरूप, प्रसार और अभिव्यक्ति के तरीकों में व्यापक परिवर्तन किया है। प्राचीन समय में साहित्य का प्रसार भोजपत्र, ताम्रपत्र और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम से होता था, जबकि आज यह डिजिटल स्क्रीन तक पहुँच चुका है। पहले अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए पुस्तकालयों पर निर्भर रहना पड़ता था, लेकिन सूचना क्रांति और इंटरनेट के विकास ने ज्ञान तक पहुँच को अत्यंत सरल बना दिया है। हिंदी भाषा के डिजिटल विस्तार में यूनिकोड तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यूनिकोड के मानकीकरण से पहले देवनागरी टाइपिंग के लिए कृतिदेव, चाणक्य आदि फॉन्ट्स का प्रयोग होता था, जिनकी तकनीकी सीमाएँ थीं। यूनिकोड के आने से हिंदी का इंटरनेट पर मानकीकरण संभव हुआ और आज व्हाट्सएप, फेसबुक तथा विभिन्न वेबसाइटों पर हिंदी लेखन और पठन सरल हो गया है।डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच प्रदान किया है, फिर भी इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जैसे 'हिंग्लिश' का बढ़ता प्रयोग, रोमन लिपि का उपयोग, निम्न स्तर की सामग्री और कॉपीराइट का उल्लंघन। इसके बावजूद यह स्पष्ट है कि डिजिटल तकनीक हिंदी भाषा और साहित्य के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान कर रही है। उचित विवेक और तकनीकी उपयोग के माध्यम से हिंदी साहित्य का भविष्य और भी उज्ज्वल बन सकता है।

बीज शब्द : डिजिटल युग, हिंदी साहित्य, इंटरनेट, यूनिकोड, ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया, ई-बुक्स, ऑडियोबुक्स, हिंग्लिश, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस।

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण होता है और भाषा उस दर्पण को आकार देने वाला माध्यम। समय के साथ जैसे-जैसे समाज और तकनीक में परिवर्तन आता है, अभिव्यक्ति के माध्यम भी बदलते हैं। भोजपत्र, ताम्रपत्र और कागज़ से होते हुए आज साहित्य ने 'स्क्रीन' तक का सफर तय कर लिया है।पहले अध्ययन सामग्री जुटाना एक श्रमसाध्य प्रक्रिया थी। यदि किसी विद्यार्थी, शोधार्थी या शिक्षक को मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत कविता 'भारत भारती' या मोहन राकेश के प्रसिद्ध नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' पर विस्तृत पाठ्य सामग्री या आलोचनात्मक टिप्पणियाँ तैयार करनी होती थीं, तो उसे कई पुस्तकालयों की खाक छाननी पड़ती थी। लेकिन इक्कीसवीं सदी में सूचना क्रांति और इंटरनेट के अभूतपूर्व विस्तार ने हिंदी भाषा और साहित्य को

प्रभावित किया है। डिजिटल युगका अर्थ केवल कंप्यूटर या इंटरनेट का उपयोग नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण सांस्कृतिक और वैचारिक क्रांति है। भारत में 1990 के दशक के अंत में जब इंटरनेट का प्रवेश हुआ, तब हिंदी भाषा के लिए यह एक अपरिचित क्षेत्र था। शुरुआत में रोमन लिपि का वर्चस्व था, लेकिन आज इंटरनेट पर हिंदी सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली भारतीय भाषा बन गई है। तकनीक ने हिंदी साहित्य के सृजन, संप्रेषण और पठन-पाठन की संस्कृति को पुनर्व्यवस्थित किया है।

विषयवस्तु:

डिजिटल दुनिया में हिंदी भाषा की वास्तविक और व्यापक यात्रा तब शुरू हुई जब 'यूनिकोड' का मानकीकरण हुआ। प्रारंभिक दौर में, विशेष रूप से 1990 से 2000 के बीचहिंदी अथवा देवनागरी लिपि में टाइपिंग करना एक जटिल और सीमित प्रक्रिया थी। उस समय हिंदी लिखने के लिए विभिन्न प्रकार के 'नॉन-यूनिकोड फॉन्ट्स' जैसे– कृतिदेव, चाणक्य, शिवाजी, मंगल आदि का उपयोग किया जाता था। इन फॉन्ट्स के माध्यम से हिंदी में टाइप तो किया जा सकता था, लेकिन इनकी सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वे सार्वभौमिक रूप से मानकीकृत नहीं थे। यदि किसी व्यक्ति ने किसी विशेष फॉन्ट में हिंदी में सामग्री तैयार की और उसे दूसरे कंप्यूटर पर खोलने पर सही रूप में दिखाई नहीं देता था। हिंदी के अक्षरों की जगह पर अजीब-ओ-गरीब चिन्ह, प्रतीक या अंग्रेज़ी अक्षरों का मिश्रण दिखाई देता था, जिसके कारण उस सामग्री को पढ़ना लगभग असंभव हो जाता था। इस तकनीकी बाधा के कारण हिंदी का इंटरनेट पर प्रभावी और व्यापक उपयोग संभव नहीं हो पा रहा था।इसी समस्या का समाधान 'यूनिकोड' के रूप में सामने आया, जिसने डिजिटल संचार के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया। यूनिकोड ने दुनिया की लगभग सभी भाषाओं के प्रत्येक अक्षर को एक विशिष्ट और स्थायी कोड नंबर प्रदान किया। इसका अर्थ यह था कि किसी भी भाषा का अक्षर अब किसी विशेष फॉन्ट पर निर्भर नहीं रहेगा, बल्कि उसका एक सार्वभौमिक डिजिटल पहचान नंबर होगा जिसे दुनिया का कोई भी कंप्यूटर या डिजिटल उपकरण पहचान सकता है। इस तकनीक ने हिंदी सहित सभी भाषाओं के लिए इंटरनेट पर समान और स्थिर मंच उपलब्ध कराया। यूनिकोड के लागू होने के बाद हिंदी का डिजिटल स्वरूप स्थायी और मानकीकृत हो गया, जिससे इंटरनेट पर हिंदी में लिखना और पढ़ना पहले की तुलना में कहीं अधिक सरल और प्रभावी हो गया।

आज हम व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम या किसी भी वेबसाइट पर जो हिंदी सहज रूप में पढ़ते और लिखते हैं, वह मूलतः यूनिकोड तकनीक की देन है। यूनिकोड के कारण अब हिंदी सामग्री किसी भी कंप्यूटर, मोबाइल या टैबलेट पर बिना किसी विशेष फॉन्ट की आवश्यकता के आसानी से दिखाई देती है। इसके साथ-साथ हिंदी टाइपिंग के कई सरल माध्यम भी विकसित हुए, जिन्होंने हिंदी लेखन को और अधिक सुलभ बना दिया। उदाहरण के लिए, 'इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड' ने देवनागरी टाइपिंग का एक मानकीकृत तरीका प्रदान किया। इसके अलावा 'फोनेटिक टाइपिंग' की सुविधा ने भी हिंदी लिखना आसान बना दिया, जिसमें उपयोगकर्ता अंग्रेज़ी अक्षरों के माध्यम से हिंदी शब्द टाइप कर सकता है और वह स्वतः देवनागरी में परिवर्तित हो जाता है।तकनीकी विकास के अगले चरण में 'गूगल वॉइस टाइपिंग' जैसी सुविधाएँ भी सामने आईं, जिनके माध्यम से व्यक्ति बोलकर भी हिंदी में लिख सकता है। इससे हिंदी लेखन की प्रक्रिया और अधिक सहज तथा लोकप्रिय हो गई। अब वह व्यक्ति भी डिजिटल माध्यमों पर हिंदी का प्रयोग कर सकता है, जो पहले कंप्यूटर या टाइपिंग से घबराता था। परिणामस्वरूप, डिजिटल मंच पर हिंदी का

उपयोग तेजी से बढ़ा और आम जन भी इंटरनेट पर हिंदी में संवाद करने लगा। इस प्रकार, यूनिकोड और आधुनिक तकनीकी साधनों के विकास ने हिंदी भाषा को डिजिटल दुनिया में एक नई पहचान प्रदान की है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने हिंदी साहित्य को मुद्रण की पारंपरिक सीमाओं से मुक्त कर दिया है और उसे एक ऐसे अनंत आकाश में पहुँचा दिया है, जहाँ उसकी पहुँच वैश्विक स्तर तक हो गई है। अब हिंदी साहित्य केवल पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इंटरनेट के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने में बैठे पाठक तक आसानी से पहुँच सकता है।

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में डिजिटल युग की शुरुआत के साथ कई महत्वपूर्ण ई-पत्रिकाओं ने साहित्य को इंटरनेट पर स्थापित करने का कार्य किया। प्रारंभिक दौर में 'अनुभूति' और 'अभिव्यक्ति' जैसी ई-पत्रिकाओं ने हिंदी के डिजिटल साहित्य की मजबूत नींव रखी। इन पत्रिकाओं ने न केवल साहित्यिक रचनाओं को ऑनलाइन मंच प्रदान किया, बल्कि पाठकों और लेखकों के बीच एक नए प्रकार के संवाद का मार्ग भी खोला। इंटरनेट के माध्यम से साहित्य को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाने में इनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

आज के डिजिटल युग में हिंदी साहित्य से जुड़े अनेक पोर्टल उपलब्ध हैं, जो हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा और विशाल भंडार को सुरक्षित रखने का कार्य कर रहे हैं। इनमेंकविता कोशऔरगद्य कोशविशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये दोनों पोर्टल इंटरनेट पर हिंदी साहित्य के सबसे बड़े 'मुक्त विश्वकोश' के रूप में जाने जाते हैं। इन वेबसाइटों पर हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित हजारों रचनाएँ संग्रहीत हैं। यहाँ मध्यकालीन संत कवियों जैसे कबीर और तुलसीदास से लेकर आधुनिक तथा समकालीन कवियों और लेखकों की रचनाएँ एक ही मंच पर उपलब्ध हैं। इन पोर्टलों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पाठक केवल एक क्लिक के माध्यम से इन रचनाओं को निःशुल्क पढ़ सकते हैं। इस प्रकार डिजिटल माध्यम ने हिंदी साहित्य तक पहुँचने का मार्ग अत्यंत सरल और सुलभ बना दिया है।

हिंदी साहित्य को 'हिंदवी' और 'रेख़्ता' जैसे पोर्टलों ने एक नए और आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया है। इन वेबसाइटों पर कविता, ग़ज़ल, कहानी और अन्य साहित्यिक विधाओं को सुंदर डिज़ाइन और आधुनिक तकनीक के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जिससे पाठकों का अनुभव और भी रोचक बन जाता है। इन पोर्टलों के माध्यम से नई पीढ़ी भी साहित्य की ओर आकर्षित हो रही है और उन्हें अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़ने का अवसर मिल रहा है।डिजिटल युग में हिंदी साहित्य के विकास में 'हिंदी ब्लॉगिंग' का भी विशेष योगदान रहा है। ब्लॉगिंग ने साहित्य की दुनिया में एक नई क्रांति ला दी है। इसके माध्यम से नई पीढ़ी के लोगों को लेखक या कवि बनने का अवसर मिला है। पहले किसी लेखक को अपनी रचना प्रकाशित करवाने के लिए संपादकों और प्रकाशकों के पास जाना पड़ता था और कई बार लंबे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी परंतु ब्लॉगिंग के आगमन ने इस स्थिति को पूरी तरह बदल दिया। अब कोई भी व्यक्ति अपनी रचनाएँ स्वयं इंटरनेट पर प्रकाशित कर सकता है और उन्हें तुरंत पाठकों तक पहुँचा सकता है। इस प्रकार डिजिटल माध्यमों ने हिंदी साहित्य को न केवल नई पहचान दी है बल्कि लेखन और प्रकाशन की प्रक्रिया को भी अधिक सुलभ बना दिया है।

पहले हिंदी साहित्य पढने हेतु ग्रंथालयों के चक्कर काटने पडते थे लेकिन आज के आधुनिक युग याने डिजिटल युग में अमेज़न किंडल, गूगल प्ले बुक्स आदि पर हिंदी साहित्य की हजारों किताबें उपलब्ध हैं। 'डिजिटल सेल्फ-पब्लिशिंग' के कारण युवा लेखक बिना किसी खर्च के अपनी किताबें वैश्विक स्तर पर प्रकाशित कर रहे हैं। 'स्टोरीटेल' और 'ऑडिबल' जैसे प्लेटफॉर्म्स ने सुनने वाले

साहित्य की परंपरा को पुनर्जीवित किया है। आज यात्रा करते हुए या काम करते हुए लोग हिंदी साहित्य की विभिन्न रचनाओं को सुन रहे हैं जिससे हिंदी साहित्य की नींव अधिक सशक्त हो रही है। डिजिटल युग के कारण ही 'प्रतिलिपि'जैसे प्लेटफॉर्म्स ने डिजिटल साहित्य में एक क्रांति ला दी है। इससे लाखों लेखक अपनी कहानियाँ, उपन्यास और कविताएँ लिख रहे हैं और करोड़ों पाठक उन्हें पढ़ रहे हैं जिससे हिंदी साहित्य अधिक लोकप्रिय बना है। इस युग में सोशल मीडिया के अंतर्गत फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप ने भी हिंदी साहित्य के संप्रेषण की गति को तीव्र कर दिया है। आधुनिक युग में पाठकों के पास समय की कमी के कारण लघुकथाओं, हाइकु और दो-चार पंक्तियों की कविताओं का चलन बढ़ा है। परिणामस्वरुप इंस्टाग्राम पर आकर्षक बैकग्राउंड के साथ लिखी गई कविताएँ युवा वर्ग को बहुत लुभा रही हैं जिससे हिंदी साहित्य के पुराने कवि या लेखकों की यादें भी ताजा हो रही है।लेकिन आज सोशल मीडिया में हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रित रूप 'हिंग्लिश' का व्यापक प्रयोग हो रहा है। हालाँकि भाषाविद इसे हिंदी के पतन के रूप में देखते हैं, लेकिन कई संचार विशेषज्ञों का मानना है कि यह भाषा का स्वाभाविक विकास है जो इसे अधिक व्यवहारिक बनाता है। कई लोग हिंदी लिखते समय देवनागरी लिपि के बजाय रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं। यह लिपि के स्तर पर देवनागरी के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है।

डिजिटल युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का विकास एक ऐसी तकनीकी क्रांति के रूप में सामने आया है, जिसने भाषा और साहित्य की दुनिया को भी गहराई से प्रभावित किया है। हिंदी भाषा और साहित्य के संदर्भ में यह तकनीक एक नए युग की शुरुआत का संकेत देती है। पहले जहाँ साहित्य की रचना, संपादन और अनुवाद का कार्य केवल मानव बुद्धि और श्रम पर निर्भर था अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से यह प्रक्रिया कहीं अधिक तेज, सरल और व्यापक हो गई है। ए.आई. के कारण हिंदी साहित्य का दायरा केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि अब यह वैश्विक स्तर पर अधिक प्रभावी ढंग से पहुँचने लगा है।

आधुनिक युग में मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने महत्वपूर्ण प्रगति की है। पहले किसी एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा में अनुवाद करना एक जटिल और समय लेने वाली प्रक्रिया होती थी। इसके लिए अनुवादकों को गहरी भाषाई समझ, सांस्कृतिक ज्ञान और साहित्यिक संवेदनशीलता की आवश्यकता होती थी। किंतु अब गूगल ट्रांसलेट जैसे डिजिटल साधनों और उन्नत एआई मॉडल के कारण यह कार्य पहले की अपेक्षा अधिक सरल और तेज हो गया है। आज ये तकनीकें विदेशी भाषाओं के साहित्य का हिंदी में तथा हिंदी साहित्य का अन्य भाषाओं में अनुवाद अपेक्षाकृत अधिक सटीकता के साथ करने में सक्षम हो रही हैं। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न भाषाओं के साहित्य के बीच संवाद और आदान-प्रदान की संभावनाएँ बढ़ी हैं।

डिजिटल युग में जेमिनी और चैट जीपीटी जैसे आधुनिक एआई टूल्स हिंदी में साहित्यिक रचना करने की दिशा में भी सक्षम होते जा रहे हैं। ये उपकरण हिंदी कविता, कहानी, लेख और निबंध जैसी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में सामग्री तैयार करने में सहायता कर सकते हैं। इससे हिंदी साहित्य लेखन की प्रक्रिया पहले की तुलना में अधिक सुगम हो गई है और नए रचनाकारों को भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए तकनीकी सहयोग मिलने लगा है इसकारण परिवर्तन के साथ एक नई बहस भी जन्म ले रही है। भविष्य में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में 'मानव सृजित साहित्य' और 'मशीन सृजित साहित्य' के बीच अंतर और महत्त्व को लेकर व्यापक चर्चा हो सकती है। कई विद्वानों का मानना है कि

साहित्य का मूल आधार मानवीय संवेदना, अनुभव और कल्पना है, इसलिए मशीन द्वारा निर्मित रचनाओं की प्रामाणिकता और मौलिकता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

डिजिटल युग का एक अन्य पहलू यह भी है कि इंटरनेट के माध्यम से हिंदी रचनाओं के प्रकाशन की प्रक्रिया अत्यंत आसान हो गई है। पहले किसी हिंदी साहित्य रचना को प्रकाशित करने के लिए लेखक को पत्र-पत्रिकाओं, संपादकों और प्रकाशकों पर निर्भर रहना पड़ता था। किंतु अब इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपनी रचना तुरंत प्रकाशित कर सकता है। इस सुविधा के कारण साहित्यिक अभिव्यक्ति के अवसर तो बढ़े हैं, परंतु इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि इंटरनेट पर बड़ी मात्रा में सतही, अपरिपक्व और निम्न स्तर का हिंदी साहित्य भी तेजी से प्रसारित हो रहा है। जब हर व्यक्ति के लिए प्रकाशन का मंच उपलब्ध हो जाता है, तब साहित्य की गुणवत्ता को बनाए रखना कठिन हो जाता है। इंटरनेट के प्रयोग के कारण उत्कृष्ट और गंभीर साहित्य की पहचान करना भी पाठकों के लिए एक चुनौती बन जाता है।इसके अलावा हिंदी साहित्य क्षेत्र में डिजिटल माध्यमों के उपयोग के कारण साहित्यिक चोरी की समस्या भी तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेट पर किसी लेखक की रचना को कॉपी करके अपने नाम से प्रकाशित कर देना आज एक सामान्य समस्या बन चुकी है। इससे न केवल मूल लेखक के अधिकारों का हनन होता है बल्कि साहित्य की नैतिकता और विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लग जाता है। इसकारण बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन डिजिटल साहित्य के क्षेत्र की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन गया है।इसलिए आवश्यक है कि डिजिटल युग में तकनीक के लाभों का उपयोग करते हुए साहित्य की गुणवत्ता, मौलिकता और नैतिकता को भी समान रूप से महत्व दिया जाए तभी हिंदी साहित्य इस डिजिटल युग में स्वस्थ और समृद्ध रूप से आगे बढ़ सकेगा।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डिजिटल युग ने हिंदी भाषा और साहित्य को हाशिए से निकालकर वैश्विक पटल पर स्थापित कर दिया है। आज हिंदी केवल हिंदी भाषी क्षेत्र की भाषा नहीं है, बल्कि वह विश्वस्तर पर धड़क रही है। आज तकनीक केवल एक माध्यमनहीं रह गई हैवह साहित्य की 'संवेदना'और 'शिल्प'दोनों को आकार दे रही है। शिक्षकों, शोधार्थियों और रचनाकारों के लिए यह एक ऐसा स्वर्णिम युग है जहाँ ज्ञान पर किसी का पहरा नहीं है। इस डिजिटल युग में आवश्यकता बस इस बात की है कि इस असीम डिजिटल प्रवाह में हम उत्कृष्ट और कालजयी साहित्य की पहचान करने का विवेक बनाए रखें। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हिंदी साहित्य को अभिजात्य वर्ग के ड्राइंग रूम से निकालकर आम आदमी के स्मार्टफोन तक पहुँचा दिया है। यद्यपि गुणवत्ता का संकट, कॉपीराइट का उल्लंघन और भाषा के छिछलेपन जैसी चुनौतियाँ हमारे सामने हैं, फिर भी डिजिटल माध्यमों की शक्ति को नकारा नहीं जा सकता। भविष्य में आवश्यकता इस बात की है कि तकनीक का उपयोग केवल हिंदी साहित्य के प्रसार के लिए ही नहीं, बल्कि उसके संरक्षण और गुणवत्ता संवर्धन के लिए भी किया जाए। देवनागरी लिपि के प्रयोग को बढ़ावा देना और डिजिटल साक्षरता बढ़ाना समय की माँग है। यदि हम इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर लें, तो डिजिटल युग हिंदी साहित्य के इतिहास में सबसे स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज होगा।

संदर्भ :

1. नामवर सिंह, साहित्य के नए संदर्भ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. विनोद शर्मा, हिंग्लिश और समकालीन भाषिक परिवर्तन, अंक 11, हिंदी अध्ययन।
3. रामचंद्र मिश्र, भाषा, संचार और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हजारीप्रसाद द्विवेदी, साहित्य और समाज, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।